जिला संसाधन मानचित्र-जिला कोल्हापुर, महाराष्ट्र

DISTRICT RESOURCE MAP-KOLHAPUR DISTRICT, MAHARASHTRA

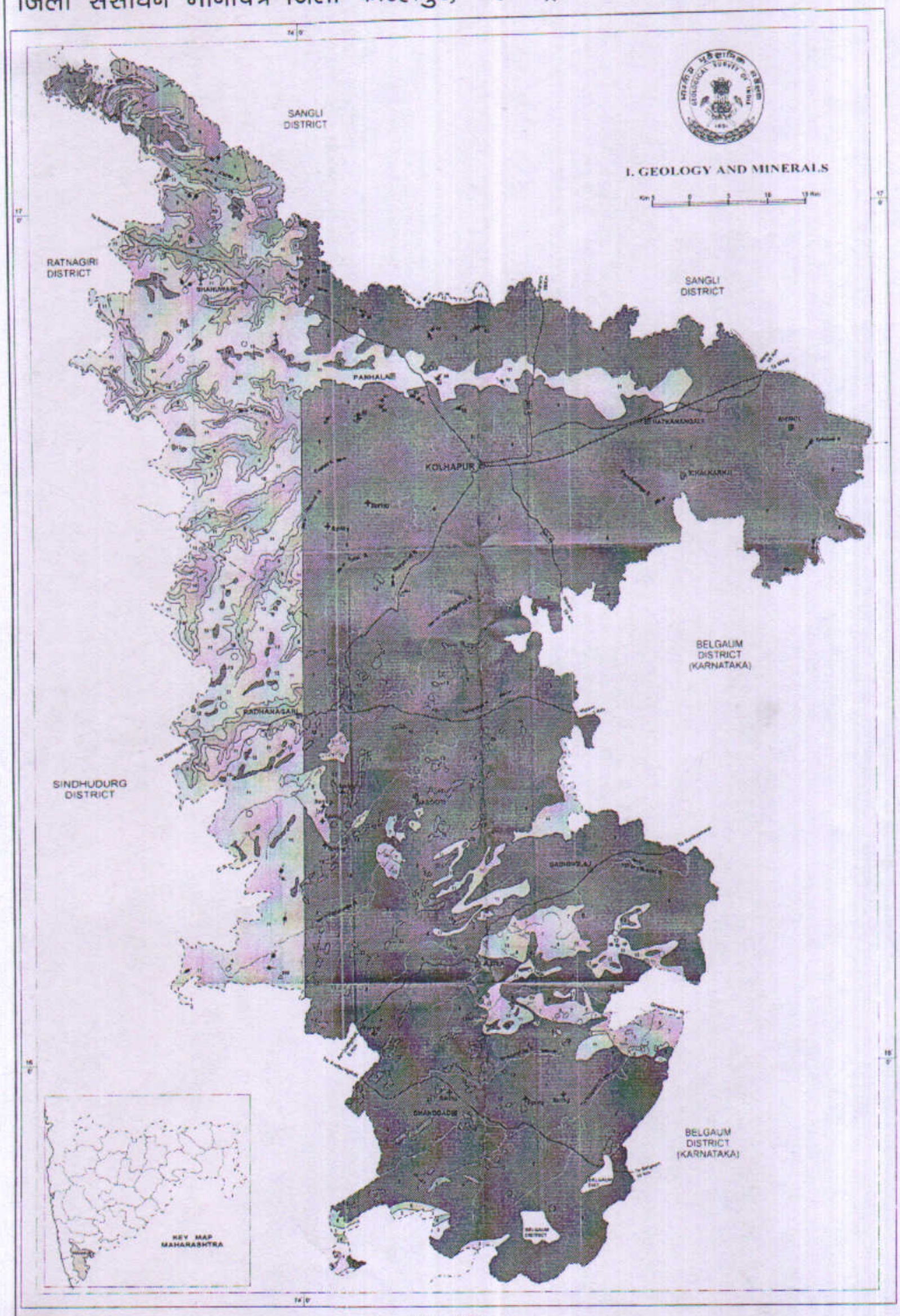

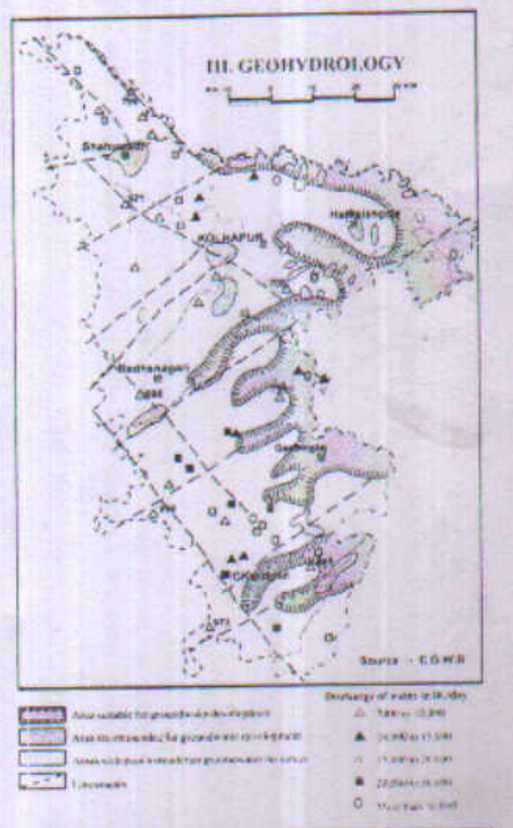

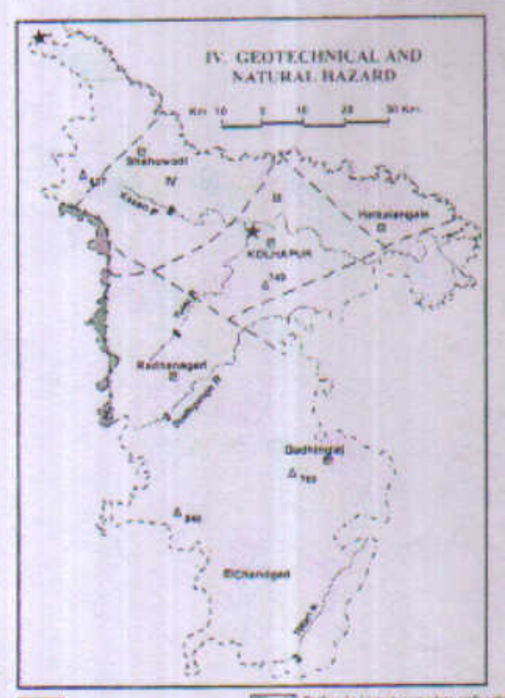

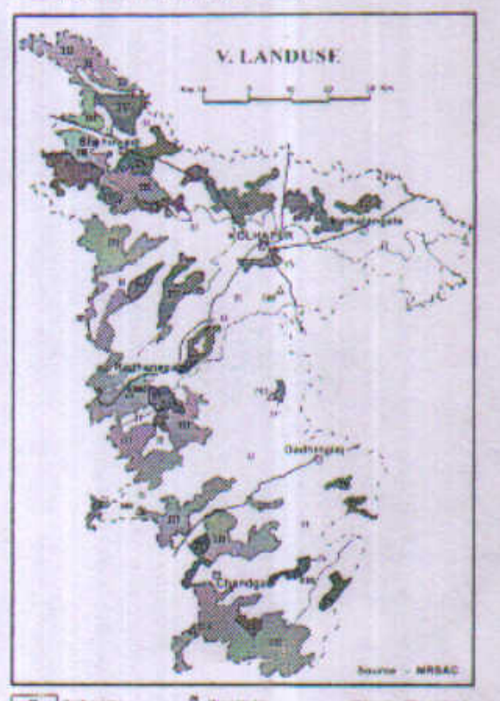

EXPLANATION

I. GEOLOGY

LITHOLOGY | STRATIGRAPHIC STATUS | AGE | NATURE & CHARACTERISTICS

- Alluvium — RECENT — QUATERNARY
- Laterite — CAINOZOIC — QUATERNARY
- Deccan Trap — Mahabaleshwar Formation, Panhalgad Formation — DECCAN TRAP (MAHARASHTRA GROUP) — LATE CRETACEOUS TO PALAEOCENE
- Kaladgi Supergroup — KALADGI SUPERGROUP — MESO TO NEO PROTEROZOIC
- Dharwar Supergroup (Koyanagunda Group) — DHARWAR SUPERGROUP (KOYANAGUNDA GROUP) — ARCHAEAN TO PALAEO PROTEROZOIC

STRUCTURAL INDEX

- Litho-contact
- Inferred litho-contact
- Attitude of bedding
- Attitude of joint : inclined/vertical
- Lineament
- Boundary between classified & unclassified Deccan Trap

GENERAL INDEX

- Triangulated station
- District boundary
- State boundary
- Railway line
- Road
- Settlement-Town, city
- Drainage with direction of flow

MINERAL SYMBOLS

- Bauxite
- Clay
- Silica sand
- Vermiculite

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिला में महाराष्ट्र और कर्नाटक के मध्य स्थित कोल्हापुर जिला भारतीय प्रायद्वीप के अंतर्गत दक्कन के लावा पठार के लिए प्रसिद्ध है तथा पश्चिमी महाराष्ट्र के कोंकण प्रायद्वीपीय विकास का केन्द्र है। जिले का कुल विस्तार 6204 वर्ग किलोमीटर है तथा यह 15°45' और 17°1' उत्तरी अक्षांश व 73°41' तथा 74°42' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है जो भारतीय सर्वेक्षण विभाग के नक्शे संख्यांक 47 जी, एच तथा एफ एवं 46 आई के समांतर है। यह उत्तर, उत्तर-पश्चिम तथा पश्चिम में पहाड़ के समान, सघनवनी तथा विस्तृत जिलों से घिरा हुआ है तथा इसके पूर्व में कर्नाटक राज्य का हलकाव जिला अवस्थित है। महाराष्ट्र, जिले का मुख्यालय है तथा इसमें शाहूवाड़ी, हातकणंगले, करवीर, राधानगरी, गगनबावड़ा, आजरा, इस प्रमुख तहसील हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 4 (पुणे-बेंगलूरु) जो कोल्हापुर से गुजरता है, इस जिले का प्रमुख राष्ट्रीय मार्ग है। जिले से रेलवे मार्ग द्वारा अंतर्गत स्थानों से अच्छा संपर्क है, अधिक लाइन मीटर है। पूरे जिले में रेल मार्ग का जिला मीटर से बीजापुर तक का रेलमार्ग जिले का रेलमार्ग कहा जाता है।

पश्चिमी घाट की महाराष्ट्र पर्वतमाला जिले में प्रमुख पृष्ठभूमि बनाती है। यह जिले विस्तार समुद्र तल से 1,200 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर है तथा सह्याद्रि विस्तार-पठार जिले के 3/4 भाग में मध्य तल के 1,225 मी. ऊँचे है। जिले की भूमि पठारी, भूमि समतल एवं लहरदार, घुमावदार व खड़ी ढलानों से परिपूर्ण है। जिले के पश्चिम सीमा, कुमार तथा पठार समतल के अन्तर्गत और कभी पूर्व की ओर प्रवाह प्रायः समान ऊंचाई व पुराणन सीमाएं, व पठारों की ओर सकल प्रायः सारा से जिसमें सभी पठारों के बीच उन्नतांश बनाते हैं।

जलवायु पोलिजोलिटिकेल्स के 1>250 से 200 मीटर तक पुराणन, पाषाण महाराष्ट्र के क्षेत्र की जिले के संरचना में स्थान क्षेत्र में पहाड़ियों के अनुसार सहसे पुराणन है। इनमें सेट-लेख, कर्नाटक मिलकर, लाटेराइट-लेटराइट-गनाइट जिला, सेट-लेखन-सेल पेरो व लिथोलेट्स/लाटेराइट जिला आदि है जो केवल द्वारा आच्छादित है। ये प्रायद्वीपीय क्षेत्र बहुमंजिल विभाग का उच्च प्रदेश बनाते हैं तथा उनमें पोलिजोलिट की तथा उच्च-पुरा-पठार -- दक्षिण-पठार-पूर्व से उत्तर-पश्चिम -- पठार-पूर्व तक है तथा यानि पूर्व की ओर जलमग्न प्रवाहित है। यहाँ से 1>250 टोपोग्राफिक मानचित्र के 1:50 से 2 करोड़ तक पुराणन महाराष्ट्र मेलमाहुर के तथा द्वारका महाराष्ट्र के उत्तर जिला है जिसमें सुरक्षा, पुष्पिका, बाबूराव/भाटीकवा व कुलिकवा जिला आदि है जो अन्य-उत्तर पठार -- दक्षिण-दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम-पूर्व -- दक्षिण-पश्चिम-पश्चिम पठार के द्वारा पहाड़ी से जिसमें पीठ (15°, 10°) है।

जो डिलिसिस पोलिजोलिट क्षेत्र के 1>2 से 2.2 करोड़ तक पुराणन हैक्टर द्वारा के विस्तार आच्छादित किये है आच्छादित भाग से घिरा हुआ है। इस लावा-प्रवाहों की पुरातनता तथा महाबलेश्वर प्रवाहित के वर्गीकृत किया गया है। पुराणन्तर प्रवाहित की कुल मोटाई लगभग 400 मीटर है। इसमें प्रमुखतया जीवाश्म प्रवाह के लावा कुछ विभिन्न भाग प्रकार सम्मिलित है। इस प्रवाहित के प्रायः 20-25 मीटर मोटा पोलिजोलिट क्षेत्र प्रायः (पोलिजोलिट लावा) एवं पिलाकन (बबल बेसाल्ट) से बना है है जिसमें मोटा प्रवाहित पेलाग्रा के बड़ी विशेषता (मोनोक्लिनल) पाई जाती है। महाबलेश्वर प्रवाहित की कुल मोटाई के लगभग 400 मीटर है। इसमें मुख्यतः अल्प मात्रायें सलमान पुत्र अथवा लावा प्रवाह आदि है जिनमें पोलिजोलिट के पोलिजोलिट जिलों में। पाषाणकण (लाटराईट) 1.6.4 वर्ष तक के बना पुराणन्तर के लेटेराइट-लेटराइट अथवा-अथवा प्रायः पठार-पोलिजोलिट पर पाया जाते है जिनकी मोटाई कुछ मीटर से 30 मीटर तक है। इनमें सामान्यतः पठार विस्तारण प्रवाहित (पहाड़ी) लेटेराइट के आच्छादन के बना पहाड़ियों लेटराइट, पहाड़ी के ढलानों पर तथा घाटी-घाटी क्षेत्रों में पाया जाता है।

लेटेराइट संरचना में लेखा व पहिंदल के रूप में पाया जाने वाला बॉक्साइट इस जिले का पोलिजोलिट पाषाणपुंजों महाँ के जिसमें पेलाग्रा बनाते (अलाग अल्युमिनियम बनाते) तथा इन्हाल्टो (हिंदिया अल्युमिनियम कम्पनी) द्वारा अल्युमिनियम तथा अल्युमिनियम धातु हेतु विदोहन का 1.0 है। जिले में कुल 7.147 करोड़ मीट्रिक टन बॉक्साइट के भण्डार है जिनमें Al O की मात्रा 40 से 61.87% तक है। बॉक्साइट के प्रमुख भण्डार जुरेवाड़ी, धनगरवाड़ी, रिंगवाड़ी-गिरगाव, पन्हाला किला, वाडेज, गगनबावड़ा, बाजीवाड़ी, कुरंदवाड़, मोहोलगढ़, मोहोलगढ़ आदि के नामीय ग्राम आते है। ये ग्रामीण के [illegible] 3 विशेषज्ञ द्वारा बड़ी-बड़ी 200 से [illegible] तक में उनके अधिक पहाड़ सेट के भण्डार

Kolhapur district is situated in the Sahyadri hills in the southern part of Maharashtra, is famous but its unforgettable contributions to Indian history and is the cradle of modern industrial development in southern Maharashtra. It has an area of 8,059 sq. km falling in between the latitudes 15°45' and 17°1' N and longitudes 73°41' and 74°42'E, in the Survey of India degree sheet nos. 47G, H and I, and 46 I. It is bounded by Sangli, Ratnagiri and Sindhudurg districts of Maharashtra on the north and west respectively, and by Belgaum district of Karnataka, on the south and east. Kolhapur is the district headquarters and Ichalkaranji, Shahuwadi, Radhanagari and Gargoti are some of the important localities. Pune-Belgaum National highway no. 4 passing through Kolhapur forms the most important road link to this district. There is a good network of roads connecting the interior villages and the districts. The rail link to Kolhapur is from Miraj on the Pune-Gooty broad gauge line of South-Central railway.

Sahyadri hills of the Western Ghats form the most conspicuous physiographic feature with many of its peaks attaining elevations of more than 1,000 m. above m.s.l., the maximum being 1,075 m. Dissected plateaus, cliffs, precipices and pinnacles, terraces, amphitheatres and deep valleys characterise this terrain. The western boundary of the district is water-divide between the eastern flowing Varna, Panchganga and Dudhganga rivers of the Krishna river basin system, and the westerly flowing rivers draining into the Arabian sea.

Dharwar Supergroup of the Archaean - Palaeo-proterozoic (>2500 to 2000 million years ago) occupying a small area in the southern part of the district forms the oldest lithostratigraphic unit which comprises meta-greywacke, chlorite-phyllite, quartz-sericite-tourmaline schist, tourmaline-magnetite- and staurolite-bearing schist which are intruded by granite. These metamorphites show effects polyphase deformation, and foliation trends NNW-SSE to NW-SE, with steep dips towards east. The **Kaladgi Supergroup** of Meso- to Neo-proterozoic age (1600 to 570 m.y.) overlies the Dharwar Supergroup forming unusual outcrops in the southern and western parts and comprises conglomerate, sandstone/quartzite and shale which show NNW-SSE to NNE-SSW trend with shallow westerly dips (5°-10°). Basalt flows belonging to the **Deccan Trap** of Late-Cretaceous-Palaeogene (66 to 62 m.y.) occupy major part of the district. In the sections where the basalt flows have been classified, they have been grouped into two Formations viz. the Panhalgarh Fm., and Mahabaleshwar Fm. Panhalgarh Fm. is about 400 m thick and comprises simple As type basalt flows with a few conspicuous flows. The top of this formation is marked by 20 to 25 m thick megacrystic flow containing large plagioclase phenocrysts. Mahabaleshwar Fm. also about 400 m thick, mainly comprises columnar As flows containing plagioclase phenocrysts. **Laterite** belonging to the Cainozoic of Quaternary age (<1.64 m.y.) occur on isolated plateau caps with thickness varying from a few metres to as much as 30 m. Secondary laterite derived by the erosion of the high level (plateau) laterite, occupies hill slopes and valley floors.

Bauxite occurring as pockets and lenses within the laterite profile, forms the most important economic mineral in the district and is being exploited by agencies like BALCO (Bharat Aluminium Co.) and INDALCO (Indian Aluminium Co.) for production of alumina and aluminium metal. The total estimated reserves are of the order of 7147 million tonnes with Al2O content varying from 40 to 61.87%. The major deposits of bauxite are located at Udgiri, Dhangarwadi, Ringewadi-Gargoti, Panhala Fort, Mohol, Radhanagari, Gargoti, Wadi, Nagartaswadi, Kusanda, Mogalgarh, Kalindgarh and Mahipalgarh. **Lithomargic clays** useful for pigments and paper industries, are found occurring below the laterite at Panhala, Bhongaon, Salpewadi, and near Gargoti. Vermiculite has been noticed in laterite/bauxite with its content varying from 200 to 1500 ppm. **Silica sand** useful for glass industry, occurs at Pa[illegible], Radhanagari, Bhandoor, Arja, Gadhinglaj and Gargoti.